उमस

चार युवा कवियां री रचनावां

सम्पादक

श्याम महर्षि

पैलो सस्करण : 1986
मोल–पन्दरह रिपिया
प्रकाशक :
राजस्थानी विभाग,
राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति,
श्रीडूंगरगढ (राज.)
मुद्रक :
सांखला प्रिण्टर्स, बीकानेर

UMAS (Poetry) Edited by Shyam Maharshi

विगत

म्हारी बात

राजस्थानी री युवा रचनाधर्मिता रो प्रतिनिधि ओ संकलन आकार मे छोटो हुय सकै, पण राजस्थानी री समकालीन कविता रो मूड सामी लावण मे सैंजोर हुवणो चाइजै, ओ म्हारो विश्वास है ।

इणमें संकलित कवियां री विगत बडी नी हुवण रै लेखै कोई सम्पादकीय सफाई नीं देवणी चांवतै थकै ई इत्तो कैवणो लाजमी है, कै रचनावां मंगावण सारू चिट्ठी-पत्री मे कसर को नीं राखीजी—कवियां रो आळस उडतां जित्ती देर लागै—बित्ती उडीक समिति री योजना मुजब संभव नी ही ।

आप री राय री उडीक अवस रैयसी ।

प्रकाशक

- अम्बिकादत्त
- जलम – सताइस वरसां पैल्यां
- भणाई – बी. ए. बी. एड.
- अबार – तहसीलदार (झालावाड)

म्हारी कविता माथै लिखणै रो सवाल

कविता क्यूं लिखूं इण कठिण सवाल रो जवाब देवणै सूं घणो दोरो है इण बात माथै ईमानदारी सूं खुद रै मननै साक्षी करणो।

इण सवाल रै नेडै जावणो रो मुतलब है कविता री कूख टंटोळनी। इण बिना बण्या बणाया झूठा, बणावटी जवाब तो दिया जा सकै, जनता री पीड़ा, संघर्ष आद पण कोई सांचो सान्तरो जवाब हाथ नी लाग रैयो है। मैं जद कविता री कूखमांय उंडो उतरु म्हनै घणी सारी धुंध नीजर आवै, साच मानज्यो औ धुंधळको म्हारै अज्ञान रो है बेईमानी रो नीं। क्यूं कै कविता री बात जद म्हारै अन्तसः मांय बड़ै अर पक'र बा'रै निकळै तद उण रो विश्लेषण करणो म्हारै बूतै रो नी। दूजां री रटी-रटाई ज्ञान री बातां रो अनुभव कैय'र मैं म्हारै ज्ञान री गरीमा नी बधारणो चावूं।

सहज बणती कविता श्रेष्ठ हुवै पण आ सहज किण चीजां सूं बणै इण नै बताणो म्हारै बूतै री बात नी। फेर भी मैं आ कैय सकूं कै म्हारै अन्तसः री भळमनसात मिनखपणो (जितो भी है) या इण सूं कैय सकां हां अनुभव री धनात्मक दीठ, रचनात्मक दीठ आ म्हनै कविता लिखणै रो कारण प्रकट करै।

जठै ताणी म्हारी समझ है। बात आ ई है कै कारण कोई दूजो भी हुय सकै पण अै कै सैग घणी उण्डी जावण री बाता है।

बखत

म्हांको बखत (वक्त)
एक रूपाळी घड़ी छ,
जे सुधरबा बगर
बन्द पड़ी छ ।

सफर

स्याम पड्यां
बरसात का मौसम में
आखरी मोटर सूं
काचा गेला प'
गांव की आडी जा र्‌ह्या छां म्हां !

मनख

सरम (शर्म) की सोरम (गंध) उडगी
मनख ज्यूं होग्या
फूल हज्यारा का ।

म्हां

म्हां, पाडा छां
साहित्य का कादा में पड्यां छा
म्हां की कविता सूं,
उतनी ही जाणकारी छ–
जतनी भैंस को खळ सूं यारी छ ।

आप न ?

॥१॥

आप न' कदी,
मीठा तेल को दियो वळती वेरां
याती की चरड़-चरड़ सुणी छ ?
बस !
अतनो सो ही छ–
जीवता रहबा को सीसाडो ।

॥२॥

आप न' कदी,
लीमड़ी का फूलां की
छणीकसी गंध सूघी छ ?
बस !
अतनों सो ही छ
सत की काया को दरसाव ।

दो चितराम:

गांव

गांव !
थारी परभात
जाण' सावली को काचो रग
चढती दपहर
जाण, चामडा का चंग
मझ दपहर
जाण' बाकरा की तांत
सांझ
जाण' रूई की पूणी
कात डोकरी, और कात ।

रेल में सूँ

आपन
कदी रेलगाड़ी मे बठ्यां
पाछ' भागता रूँखड़ा देख्या छ ?
जाण' गांव स्कूल सूँ
बस्तो लेर भागतो जा रह्यो होव'
अर माथो हला-हला'र
कह रह्यो होव'
म्हां तो न्हें पढां !
म्हां तो न्हें पढ़ां !!
म्हां तो न्हें पढ़ां !!!

परजातंतर बचा लीज्यो !

अठी की परवा मत करज्यो
आप तो बस उठी नमटा लीज्यो ।
पुलिस लगा दीज्यो,
फौज लगा दोज्यो,
लाठ्यां पड़ा दीज्यो,
गोळ्यां चलवा दीज्यो
खून की नंदी व्हवा दीज्यो
पाछी मत' दीज्यो
मनख मर' तो-मरवा दीज्यो
बस थां तो परजातंतर बचा लीज्यो ।

जरूरत पड' तो-दंगा करा दीज्यो
क काळ पटका दीज्यो
क बाढ़ क सूखो-क हड़ताल करा दीज्यो
लूट खसोट, मारा ठोकी, जे मरजी पड़' जे
फांस्यां लगा दीज्यो,

गळा कटा दीज्यो
कोई थांक' खिलाफ बोल'
तो जेल में बुजा दीज्यो
नांव भी काची मत अणाज्यो मन में
बस थाँ तो परजातंतर बचा लीज्यो ।

म्हांका तो छोरा-छोरी
काट देगा बगर पढ्याँ ही जमारो
कतावाँ क लेख कागज की फकर मत करज्यो
थाँ तो परच्या छपा लीज्यो
एक बार न्हें बार-बार
थाँ तो कराता ही रीज्यो
जद ताईं थाँ न्हें चुण जाओ
हचकचाज्यो मत—
जे जरूरी समझो तो
सालवार 'क' सालवार
चुणाव करा लीज्यो
मजा में रीज्यो, मजा उड़ाज्यो
म्हांकी आडी भलाँईं पाँच साल तांई मत न्हाकज्यो
पण वाँ ऊपर का इजलास में
गोड्याँ मत गाळज्यो
भल्याँ ही,
अठी का उठी मल जाज्यो
टोप्याँ रंगा लीज्यो
मूंछ्याँ मुंडा लीज्यो, पण
बस ! थाँ तो परजातंतर बचा लीज्यो ।

बज्जी अर डाँव

म्हांका जीवाँ प ब' ठी छ
म्हांका हेताकुआँ की मरजी !

बखत !
म्हांका छोगण्या कर' र खड जाव'
ये म्हान' बरज', बोलवा न्हे दे
न्हावो तो दूर की बात
बायरा की नंदी मे
पग भी झकोळवा न्हें दे
जीभ की जाजम प बठ्या छ
म्हांकी सांसां का पांसा
ऊंचा उछाळ' र ढांक दे छ ।
तोल भी न्हें पड़वा दे क-
पोबारा पड़्या-क-तीन काण्या ।
म्हान ! काई तोल
म्हांकी बज्जी, अर म्हांका दांव तो
म्हांका हेताळुआं क हाथ छ ।

कविता का बारा में

आप, म्हारा हेताळू छो
म्हारो भलो चाहो छो
आप मं सूं बार-बार कहो छो
कहता रहो छो—म्हूं मांडूं
और मांडूं-कविता गीत
मांडतो रहूं—
पर कद तांई मांडूं ?
कांई मांडूं ? आपही फरमाओ ।।

पण आपको ई सब सूं कांई लेणो-देणो
आपको तो बस, सिरफ यो ही कहणो छ-
म्हूं मांडूं-खूब-खूब लिखतो रहूं
पर अब म्हारा बस की कोई न—
सांची कहूं छूं—

म्हारे आस-पास बीतगी-कविता री क्यार्‌याँ
म्हारे आस-पास सुसग्यो-भावाँ को समंदर
साफ-साफ मटरग्या-शब्दाँ का सेनाण ।

लोग झूठ्याँई गाता फर' छ
मीठा-मोहक अर सोरम का गीत
गीत अब धर्‌या क्हाँ छ ?
म्हूँ जाणूँ
गीत मूंडा सूँ न्हें – मन सूँ खड' छ ।
पण मन ! – क्हाँ रह्‌यो मनख क गोड'
अब तो बस–

माथो छ– जे भण्णं भट्ट घूम' छ

नाड़की छ– जीव' धर्‌यो छ–
जिन्दगानी को जूड़ो
अर, जे रोटी की सलामती कलेख'
झुकाबा में काम आव' छ–

कांधा छ– जे झुकता जा रह्‌या छ–
आग' की आडी
अर धकेल रह्‌यो छ–
जिन्दगानी की गाड़ी ।

काधा सूँ लटक्या छ-दो हाथ
जे बस यूँ ही लटक्या छ
जाण' खूँटी प लटकी होई-बगर आस्तीन की कमीज
छाती में भर्‌यो छ– आखा मलक को कबाड़
धुंध – धूँधाड़–

जरा सी भी ठाम खाली कोई नें/छाती में
ज्याँ होर सांस/बगर भड़भटाँ खायाँ खड़ज्या ।
पेट – बिलकुल खाली छ
जीक चारूँ मेर

शरम की मारी
म्हांन – लपेट म्हल्या छ–
गीतां का कमरपेटा–
पेट बार' सूं भर्‌यो दीख' छ
पण, भीतर सूं खाली छ–
यो ही कारण छ–
म्हाँका मूंडा प गीत कोई नें
हाथां में फूटी थाळी छ ।
अब आप ही बताओ
कोई पांवां सूं कविता मांडूं ?
पांवां में ?
पांवां (पगां) में भर्‌या छ–
मनमान सारा – बेशुमार
भटकता । बळबळता । कंटीला गेला
कविता डोलती फर' छ ज्यांय-उभाण' पगां
बना लत्ता पहर्‌यां
नागा डील सूं
यां गेलां प
आंख्यां मींच्या – भांभर भोल्यां खार्‌या छ
रूपाळा मोहीला गळा का गीत ।
म्हारा रोम-रोम में
कही भी कोई नें-कोई भी
सांची कविता को स' नाण
म्हार' च्यारूं मेर–
उग र्‌हयो छ–थूर को बन
आप ही बोलो/आप ही फरमाओ ।
आप क' तांई
कसी ड़ाक प सूं तोड़'र दूं
एक भी आधी भी
चम्पा की कळी ?

नांव — चेतन स्वामी

जलम — १९५७ (श्री डूंगरगढ़)

— लारलै सात-आठ वरसां सूं
राजस्थानी मे कवितावां लिखण री
हठौठी। अेक पोथी ई छपी- 'सवाल'।
'राजस्थली' त्रैमासिक रै
सम्पादन - विभाग सागै जुड़ाव।

कविता क्यूं लिखूं ?

आं कवितावां बाबत म्हारी खुद री टिप्पणी आ ही बणै कै अै नीं तो पड़ी मिली अर नी खड़ी मिली। बस अडीकती मिली अर सागो हुयां पछै गळबाथ घाल सागै-सागै बैवती रैयी है। गेलै री अबखायां-अंवळायां सूं अै सदा मनै चेतांवती रैयी है।

कविता लिखणी म्हारै खातर इत्ती सोरी-नी जियां कै कवि लोग कवि सम्मेलन मांय पूगतां ई बठै रो माहौल देख'र कविता बणाय सुणाय देवै। म्हारै खातर कविता मन री अबखाई मनरी अन्तस: चेतना मांय उगता नूवां नूवां सवाल जद म्हारी कल्पना रै सागै बारै आवै तो बै शब्द कविता बणै। मैं आ नी कैय सकूं कै कविता म्हारै सूं चाऊं जियां क्यूं नी बणै अर कविता रा शब्द मतोमती भाव बण'र बारै आय जावै।

कविता म्हारो शौक नी कविता म्हारी जिंदगाणी रो एक अंग है।

गजवण

थारै सू किण भांत करु पसारो सनेव रो
म्हारी हेजाळू
वांह-वाह में भर लूं देह
ऊभी अड़क बाजरी रै बूंटा ज्यूं

मैं बांथळियो सूकूं
--छीजू
थारै सूं उपनियोड़ा - फंटियोड़ा घोया नै
निरखतो
कसमसीजू
रगत बायरी देख देवळ्यां

तू गजवण
सिरफ गजवण होयजा
मैं थारै पासंग की नी सोचू
अड़ी मदमाती मूरत होयजा नी
निरखूं नितउठ तनै ई वस !
पंपोळूं रुंआळी
गिणूं नी थारी निकळियोड़ी पांसळियां
तू मतवण भारत माता
तू गजवण होय जा

मैं कळीजू
चौफेर पसरती ओकळी माय
कळीजतो ई जावूं
ओळै-दोळै ऊगती अवखायां मांय
मैं अवखायां नै नी
तनै भालणो चावूं कामेतण
मैं थारै रूं-रूं मांय सोधणी चावूं बास
हरियास

उण रूपाळी सिनेरचां रो
जठै वरगभेद - भूख - प्रताड़ना
हाहाकार
कीं नीं होवै

तूं ई बता साथण
मैं कीकर देखूं थारै डील रा
खिडियोड़ा घोचा नै
अर भेळा करनै लगाय लूं काळजै
अेक ठंडी कसक पूरीजै
मैं तनै हिवड़ै रै चेपी है काठी
अतस रै ओळै लुकोयी है तनै

कठै है अैड़ो उछाव
म्हां मरियोडा मुसाण में
थारै ई डील सूं निकळियोड़ा
तीखा तीरिया नीं पीवण दे
सौरम रो छाजा - छाजलां अमरस
गडै रुं-रुं मांय
चीसै हरदम

अैड़ै में कोई
कियां कर सकै
कंचन वरणी देह रो गुमान
मैं मरवण इण वास्तै ई भूलूं हूं तनै

मुगति रा मारग

थारै खातर
योजनावां रो प्रदूखण पाद
सूंध्यां राख
राज री हवाबाणी सूं

अठै कला है – कळाकार है
सत्ता है – अंलकार है
जळ है – जळजळाकार है

डूबै तो डूब पताळा
तिरै तो तिर तीरां
जस गावै तो घणा ई
सूर - तुळसी - कबीर - मीरां

हरखीज तूं
कैड़ो देस है
भोळी-डाळी गायां नै भरमावण
भगवा-भेस है
संसार अ-सार है
विधवा रो सिणगार

भूखो है तो वरत कर
धापतो है तो हित्या कर

दंगो करै तो
पंजाब है - आसाम है
मन भावै जिता काम है
आराम ही आराम है

भूख मेटण रो मारग अेक ई
तस्करी करै तो दाम है
राज कर नेतो वणिया सूं नाम है
अे सगळा ई मारग मुगति रा

भोपाल

सिराणै सापां री

खुर्राट सुण
मौत रै खातर
माकूल नी होवै
ओ कैवणो कै
वा बिन पग बजायां आवै
सत्ता री तमीज
मिनख नै जीणो सिखावै
सिझ्या री सिझ्या
काया नै भाड़ो देवण रै मिस
जेर पावै

भोळा-डाळा जीव
दापळ्या रैवणो ई चोखो समझै
वांरै खातर घणो फरक
नी राखै
सायनायड कै ऑक्सीजन

मौत रो पीवणो
रात रै सरनाटै
सगळै सैर नै
पीय जावै चुपचाप
पण कांयी मामळ री वात
सत्ता रै सांगेड्यां रै
हजारां री मौत रा मर्सिया
नीं डुलाय सकै सिंघासण
जाणै मिनख नी मर्‌या होवै
फगत खड़बड़ीज'र फुट्‌या होवै वासण

नीं होवै मामळ री बात
उण लम्पट मुलक रै खातर
जको नितरा घड़ै अैड़ा तीर
जिण सूं खेलीज सकै सिकार
सायंत रा कबूड़ां रो

पेट रै दरड़ै ने बूरण वाळा
नी समझै ओ दरसण कै
जैर वेचणो ई हुया करै
पूंजीपत मुलकां रो वोपार
आवो हजारां री मौत रा
मरसिया गावां
परमाणु री पांखवाळै
रण पांखी नै दुरासीस देवां

अबागळ

ओ अवागळ
दिवकी कूदियां सूं नीं होवै
मारग ओछो

दड़ाछंट दौड़ण खातर
दोय चीज होवै जरूरी
रस्तै री सोराई
नै पगां री सैंठाई

मद गैळिजियो तूं
नीं जाणै सत्ता रो सांगपणो
सांग बणियोड़ा भांडां में
सोधै तूं खुद रो सुख

ओ भारत
जठै नित मंडै महाभारत
नित बधती अंवळायां खातर
अबागळ उडीकै लेवण नै औतार
सोच ! अैड़ी गऊवां मैं पोटावण खातर
रथजात्रा जैड़ा क्यूं नीं होवै वौपार

जिण सूं खेलीज सकै सिकार
सायंत रा कबूड़ां रो

पेट रै दरड़ै ने बूरण वाळा
नीं समझै ओ दरसण कै
जैर बेचणो ई हुया करै
पूंजीपत मुलकां रो वोपार
आवो हजारां री मौत रा
मरसिया गावां
परमाणु री पांखवाळै
रण पांखी नै दुरासीस देवां

अवागळ

ओ अवागळ
दिबकी कूदियां सूं नी होवै
मारग ओछो

दड़ाछंट दौड़ण खातर
दोय चीज होवै जरूरी
रस्तै री सोराई
नै पगां री सैठाई

मद गैळिजियो तूं
नी जाणै सत्ता रो सांगपणो
सांग बणियोड़ा भांडां में
सोधै खुद रो सुख

ओ भारत
जठै नितमंडै महाभारत
नित वधती अंवळाया खातर
अवागळ उडीकै लेवण नै औतार

सोच ! अैड़ी गऊवा नै पोटावण खातर
रथजात्रा जैड़ा क्यूं नीं होवै वीपार
प्रजा खातर राजा होवै
पैली कूख जणती अवै पेटी
सरतर दोवां रा अेक जैड़ा

थे हो भोळा, फगत आस राखो
हाकम हकीम अैलकार
अे ई तो रैया - अे ई होवै
राजा रै नैड़ा
तनै अवागळ
दौड़णो है चावै तिरणो
निरणै
बस एक ही है करणो
माथो भुकावैला ?
माथो कटावैला ?
या रस्तै नै पार करण खातर
कंडेक्टर नै पटावैला ?

रसूल हमजातोव खातर

थे रमाई है भभूत रंजी री
थांरै खातर मोटी होवै सौगन
माटी री
थांरै रुं-रुं मांय
वासती व्हैला
माटी री मै'कार
माटी रो ई अै'कार

जलमभोम रो मान है
वण्यो व्हैला थांरो खुद रो मान

सवाल रै सामीं सवाल

पूछते हैं वो कि गालिब कौन है
कोई बतलाओ कि हम बतलाएं क्या

कविता रै पेटै म्हारी परेसानी गालिब सूं जरा भी कम कोनी। जद सूं मैं कविता लिखणी सरु करी या कविता लिखण री आंट म्हारै मांय आई, म्हारै अेड़ै-छेड़ै फगत अेक ही सवाल भमतो रैयो कै मैं कविता क्यूं लिखूं ?

संस्कार अर खून रै मांय कविता रो 'क' भी कोनी। संगत सूं कविता रो आंतरो कोसा न कोस रो। पण फेर भी टूटी-भांगी कविता करूं। क्यूं करूं, ओ सवाल पाछो आय उभै।

कविता मनै घालती ड्यो नी ऊकलै। उणरै ऊकलण रा केई कारण है अर उण कारणा रा दवाब मनै कविता घरण मे मदत करै। अै कारण म्हारी जाण माय सैगा नै आन्दोलित करता व्हैला। संप्रेषण री नानाविध विधावा रा जनक स्यात अै कारण ई है। आं कारणां नै पजोखण खातर म्हारै कनै एकहीज हथियार है अर वो है कविता। बस ! म्हैं कविता नै म्हारी बात कैवण रो सैगा सू आछो तरीको मानू। आप कोई और तरीकै सूं आपरी बात नै दूजां रै सामी राखता व्हैला — मैं कवित रै जरियै म्हारै विचारां नै केवटू।

कविता मे म्हारी जबरदस्त आस्था है। जठै-जठै ससार म्हारो सागो छोड्यो है, बठै-बठै कविता म्हारी आंगळी पकड'र कई दूर तक सागै चाली है। जद-जद भी विस्वासां रा वळा तूट्या है — म्हारी आस्था री छान नै कविता थूणी बण'र थामी है।

एक बात कैवणी चावूला कै म्हैं जकी बात म्हारी कविता सूं नीं समझा सकूं वा कविता री वकालत सू भी नी समझा सकूला। कविता भूमिका अर बयानां री भूखी नी होवै।

कवित विवेक एक नहिं मोरे।
सत्य कहहु लिखी कागद कोरे।।

दरद नै संभाळ मतां

दरद नै संभाळ मती, बांट दे बंटेरा
पूर पल्ला झोळी झण्डा, डांग ऊपर डेरा
पूण पावलै नै जोड़,
गांठ, करी टापरी
टापरी में आ बस्यो तो,
लोग-बाग वा करी
रात रात काटणै रा ढूंढर्‌यो वसेरा
पूर पल्ला झोळी झण्डा, डांग ऊपर डेरा
बांदरा तो बांदरा है
घौंसळा उजाड़सी
पंच वण जम्या रैया तो
मंच नै उखाड़सी
बांधले तूं पोटळी, समेट सांग तेरा
पूर पल्ला झोळी झण्डा, डांग ऊपर डेरा
झूंपड़ी रो सोच छोड़
झूंपड़ी ही सीर री
झूंपड़ी अर गळ कट्‌यां नै
देख कै कबीर जी
कही' क लाज लांग सेती, लूटली लुटेरा
पूर पल्ला झोली झण्डा, डांग ऊपर डेरा
भैम नैं हजार सीच
भैम किसो भायलो
भैम रै भरोसै रैयां
मर ज्यासी मांयलो
भैम पाळ्यां लावरी भी, लागसी बघेरा
पूर पल्ला झोली झण्डा, डांग ऊपर डेरा

जीणो भी के जीणो है

बांवरियो वण जिनगाणी नैं, जीणो भी के जीणो है
तणियां ताण जरा सो गुटको, पीणो भी के पीणो है

खुद सूं वतळातां घबरावै
खुद सूं ही खुद डरचो फिरै
गली सांकड़ी सामै गोधो
घूम जीवड़ा परै परै

मन हीणो है आ तो जाणूं पण इतरो के हीणो है
तणियां ताण जरासो गुटको पीणो भी के पीणो है

कुणसा गीत गळ्यां गावण रा
कुणसा मंचा बीच जमै
गीता मांही गमज्या भागी
आं बातां मै मत भरमै

गीतकार सो लाग यार, तूं लागै जियां कमीणो है
तणियां ताण जरासो गुटको पीणो भी के पीणो है

घरघुल्या सा ठांव, ठांव रा
ठोड़ ठाइंचा रैया कठै
गळ गचियां नै छोड, बाटियां
ओट, भायला गया कठै

रोटी पर चटणी मिरच्यां री, घीणो भी के घीणो है
तणियां ताण जरा सो गुटको, पीणो भी के पीणो है

समरथ सामी लुळकै बोळै
हीणा सूं अळबाद करै
लखणां रा लाडेसर मतना
मिनख जूण बरबाद करै

कांण कायदा राख गांव तो सगळो ही साखीणो है
तणियां ताण जरासो गुटको, पीणो भी के पीणो है

गीत मेरा

मैं जोगी वण फिरूं गावतो, किण री माया है
यूं लागै अै गीत मेरा, सागी मां जाया है

दरखत दरखत फिरूं भटकतो
तो भी ठोर कठै
रैण वसेरो इण डाळी पर
तड़कै ओर कठै

गेल जलम में स्यात पखेरू, खूब उडाया है
यूं लागै अै गीत मेरा, सागी मां जाया है

मिनखां भेळै मिनख वणूं तो
अजब संजोग करै
दुख मेरा अर सुख री पाती
सगळा लोग करै

जद जद भी मैं हुयो अेकलो, आं नैं गाया है
यू लागै अै गीत मेरा, सागी मा जाया है

अै ही गीत सगा समधी अर
अै ही मीत मेरा
छाणां और पटेलाई मे
अै ही गीत मेरा

आं रै सिवा जगत रा सगळा, समव पराया है
यूं लागै अै गीत मेरा, सागी मा जाया है

कितरी आस विराणी होगी
कितरा चाव मर्‌या
पण गीता रा घाव आज भी
लागै हर्‌या भर्‌या

आं गीतां रै पाण सास, इण जूणी आया है
यू लागै अै गीत मेरा, सागी मां जाया है

के होतो ?

जिसा आम्हड़या पड्या नहीं, जै पड़ ज्याता के होतो
वण जंगळ रा फूल हवा सूं, झड़ ज्याता के होतो

प्रीत रीत में देवदास नै
बस दुख पातां देख्यो
दरद आपरो लोगां सामी
पी कै गातां देख्यो

के विस्वास पराये मन रो, वड़ ज्याता के होतो
वण जंगळ रा फूल हवा सूं झड़ ज्याता के होतो

साप, गोयरा पाळ, पिटारी
भर, बाजीगर बणग्या
डंक तोड खुद कै पेप्या
अर खुद में ही डर बणग्या

इतरो जहर भरयो भीतर जै सड़ ज्याता के होतो
वण जंगळ रा फूल हवा सूं झड़ ज्याता के होतो

जका सूरमा जणै जणै में
जोश घणो भर राख्यो
वे ही बैरयां सूं गुपचुप में
समझोतो कर राख्यो

यां बीरां रै पाण जगत सूं भिड़ ज्याता के होतो
वण जंगळ रा फूल हवा सूं झड़ ज्याता के होतो

उरे सरूपो घाटो छिड़को
वी पार बरसता दीख्या
सरहद रा हकदार हता
रै मार सरणा दौड्या

हक री बात लिया हक सारू अड़ ज्याता के होतो
वण जंगळ रा फूल हवा सूं झड़ ज्याता के होतो

आओ पधारो उरै विराजो, कांई परोसां सेवा में
म्हे तो अब तक करद्या पंचजी, सिर्फ भरोसा सेवा में

कितरी वार गुलगलां खातर
टाबर रोता सो ज्यावै
कितरी वार लापसी दळियो
तीज त्युंहारां हो ज्यावै

थांनै बरफी कळाकंद अर चाय समोसा सेवा में
म्हे तो अब तक करद्या पंचजी सिर्फ भरोसा सेवा में

थारी बात राम सूं वेसी
और कहो के चावो हो
अब तो हार जीत सै हो ली
क्यूं दुख पावण आओ हो

म्हे ही मालिक पगा उभाणा आस्यां कोसां सेवा में
म्हे तो अब तक करद्या पंचजी सिर्फ भरोसा सेवा में

दोरा-सोरा करता दौरा
फिरो, आण ना थावर की
अब कै माड़ा लागो, चिंता
लागी देस-दिसावर की

मौज करो मोटा हो जास्यो, म्हांनै ठोसा सेवा में
म्हे तो अब तक करद्या पंचजी सिर्फ भरोसा सेवा में

म्हे तो जलम लियो ईं खातर
सेवा करता मर ज्यास्यां
तवा परातों बेच बाच कर
थारी हटड़ी भर ज्यास्यां

खुद नै लूटां, खुद नै खावां, खुद नै खोसां सेवा में
म्हे तो अब तक करद्या पंचजी सिर्फ भरोसा सेवा में

बातां में

अब बरसूं मैं अब बरसूं बरसात निकळगी बातां में
बोळा भैम पाळ कै सोग्या, रात निकळगी बातां में

कुण जाणै के जोगी होता
के मिल ज्यातो जोग लिया
भैम हूंडायां फिरै आज तक
काया में सौ रोग लियां

भूख भजन कर री है कड़तु, आंत निकळगी बातां में
बोळा भैम पाळ कै सोग्या, रात निकळगी बातां में

दुनियां दुख पावै है सारी
मन मौजी तो मौज करै
तन तो ढूंढै भैंस यार, पण
मन हिरण्यां री खोज करै

पीकर पाणी बोल्या बाणो, जात निकळगी बातां में
बोळा भैम पाळ कै सोग्या, रात निकळगी बातां में

वां सूं के बतळाणो जां री
बात बात में घात बणै
अेक बात सांची कैंद्यो तो
भांत भांत री बात बणै

पण बिना बात ही बात बात में, बात निकळगी बातां मे
बोळा भैम पाळ कै सोग्या, रात निकळगी बातां में

लोग बाग तो बोळा देख्या
इसा नीं देख्या ओर कठै
सांचा खाता फिरै खूंसड़ा
तफरी कररृया चोर अठै

बुगला यार बण्या हंसा रो पांत निकळगी बातां में
बोळा भैम पाळ कै सोग्या, रात निकळगी बातां में

गीतकार

गीतकार गा गीत थार क्यूं राग गळै में अटकी
ऊपर गई नीं नीचै आई, अधर धार में लटकी

तेरा गीत, गीत ना तेरा
जण जण रा बण ज्यासी
गीत कबूतर पाळ, प्रीत
रा नै परवाना जासी

कर जोगी री जुगत गीत में उमर समूळी कटगी
ऊपर गई नी नीचै आई अधर धार मे लटकी

इकतारो, गुड़ताल, झांझ
मिरदंग पर तान मजीरा
निरगुण संत कबीर, सगुण
नै नाच सुणाती मीरां

सूरदास री आंख गीत बण देग वात घट घट की
ऊपर गई न नीचे आई, अधर धार में लटकी

लोग कवै मरिया पाछै
कै गीत रैवै कै मीता
मीता रो विस्वास नहीं
गीतां मे हुया नचीता

गीत गळी पर गांव गुवाड़ी बांट्या भी नी बटगी
ऊपर गई नी नीचै आई, अधर धार में लटकी

जाग्यां पार पड़ैली

मन रा मौजी राम मानखा, जाग्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरो, भाग्यां पार पड़ैली

कद तक गफलत री नींदां में
सुत्यो रेसी बेली
तेरे फूस छांन पर कोनी
लोग चिणाली हेली

पूण पावलो जोड़ जुगत में लाग्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरी, भाग्यां पार पड़ैली

तूं दे साग, रोटड़ी तूं दे
तू कुड़ता करवा दे
तूं दे तूं दे करे, स्यान
क्यूं तेरी जघां जघां दे

कितरा दिन तक जणै जणै सूं, मांग्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरी, भाग्यां पार पड़ैली

सगळा ही ठाला रै ता
जै आळस घन कर वा दे
मन री मानै बात, माहिनै
बड़ के मन मर वा दे

कांधै धरी दुनाळी मन पर, दाग्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरी, भाग्यां पार पड़ैली

बडकां री तूं बात छोड़
बडका तो पूरी करग्या
वां ही लीकां ने पीटी तो
आ ही जाण ले मरग्या

बखत भागर्‌यो तेज डोळियां, डाक्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरी, भाग्यां पार पड़ैली

गीतकार

गीतकार गा गीत यार क्यू राग गळै में अटकी
ऊपर गई नी नीचै आई, अधर धार में लटकी

तेरा गीत, गीत ना तेरा
जण जण रा बण ज्यासी
गीत कबूतर पाळ, प्रीत
रा ले परवाना जासी

कर जोगी री जुगत गीत में उमर सभूळी कटगी
ऊपर गई नी नीचै आई अधर धार मे लटकी

इकतारो, खुड़ताल, झांझ
मिरदग पर तान मजीरा
निरगुण संत कबीर, सगुण
नै नांच सुणाती मीरां

सूरदास री आंख गीत बण देख बात घट घट की
ऊपर गई न नीचे आई, अधर धार में लटकी

लोग कवै मरियां पाछै
कै गीत रैवै कै भीता
भीता रो विस्वास नही
गीतां मे हुवा नचीता

गीत गळी घर गांव गुवाड़ी बांट्या भी नीं बटसी
ऊपर गई नीं नीचे आई, अधर धार में लटकी

जाग्यां पार पड़ैली

मन रा मौजी राम मानखा, जाग्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरो, भाग्यां पार पड़ैली

कद तक गफलत री नींदा में
सुत्यो रेसी बेली
तेरे फूस छांन पर कोनी
लोग चिणाली हेली

पूण पावलो जोड़ जुगत में लाग्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरी, भाग्यां पार पड़ैली

तूं दे साग, रोटड़ी तूं दे
तूं कुड़ता करवा दे
तूं दे तूं दे करे, स्यान
क्यूं तेरी जघां जघां दे

कितरा दिन तक जणै जणै सूं, मांग्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरी, भाग्यां पार पड़ैली

सगळा ही ठाला रै ता
जै आळस धन कर वा दे
मन री मानै बात, मांहिनै
वड़ कै मन मर वा दे

कांधै धरी दुनाळी मन पर, दाग्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरी, भाग्यां पार पड़ैली

वडकां री तूं वात छोड़
वडका तो पूरी करग्या
वां ही लीकां नै पीटी तो
आ ही जाण ले मरग्या

वखत भागर्‌यो तेज डोळियां, डाक्यां पार पड़ैली
चोर पोटळी लेग्या तेरी, भाग्यां पार पड़ैली

जाण ज्यातो पैली

जाण ज्यातो पैली पिछाण लेतो घातां
गजवण री सुण राखी लाम्बी चौड़ी वातां

हळ हाळी रूळ्या
ना जोडै कोई दीखो
झूला रै गीत विना
तीज फीकी फीकी

है खेत सुका सुका अर कोनी बरसातां
सावण री सुण राखी लाम्बी चौड़ी वातां

चग चाव चुक्या
ना गौरवै झाकै गौरी
छैल सारा कगला
जागै तो करै चोरी

ना राग रग रोळी ना रूप रळी रातां
फागण री सुण राखी लाम्बी चौड़ी वातां

उमर पचीसी मे
लारै लागा टावरी
मरवण री आस्या सू
झांकै टूटी टापरी
ना प्रीत वाट जोवै ना भोळी चढै छातां
जोवण री सुण राखी लाम्बी चौड़ी वातां

कविता क्यूं लिखूं ?

क्यूं लिखूं ? ओ सवाल मनैं यूं लागै जाणैं किणनैं ई पूछां कै वो क्यूं जी रैयो है ? म्हारै वास्तै रचनाकर्म कोई निजू मामलो नी है। जिण समाज या हालात मांय मैं रैवूं, वो म्हारी जूण रो अेक अंग है। वो उडाण भरै तो उणरै परां रो मैं ई अेक हिस्सो हूं, इण भांत जे उणनैं किण ई तरै री पीड, खीझ, गुस्सो या दबाव है तो उण मांय भी म्हारी हिस्सेदारी है, उण सँग नै मैं ई भुगतूं अर मैसूस करूं।

सूटेड-बूटेड छोरा नैं देख मनैं लिखणो नी सूझै पण जे उण सामैं उणी जेड़ी टीगर नैं हाथ फैलायां उभो देखूं तो मनैं लिखणो जरूरी लखावै। उण हाथ पसारण वाळी थितिया नैं कुरेद्यां बिना म्हारो मन नीं मानैं। आदमी-आदमी बरोबरी रै स्तर माथै क्यूं नीं रैय सकै आई म्हारै लेखण री पीड है। दो-च्यार दिनां सूं भूखै मिनख रै गिलगिलिया करोला तो वो हस देवैला पण कांई वो असल मे हसणो है ?

मौजूदा हालातां खातर 'समर्पण' म्हारी कवितावां रो भाव कदे ई नी बण्यो, नीं बणैला। 'रसो चालै' या 'रसो आच्छो' री गत में पड़'र मैं अकाळ मौत नी मरणो चावूं। मारग सूं ओझड़ हुय जावण रा खतरा सँग रै साम्हे रैवैं, मैं इणा खतरा सारू आगूंच सावचेत हूं। इण वास्तै कदे ई गैर जिम्मेवारी रै भाव सूं लेखण रै हाथ नी लगायो।

हालातां सूं लड़ाई जूण री महताऊ अर जरूरी सर्त है अर खुदरी पिछाण रो माध्यम रो पण। यूं तो लडाई पशू भी करै पण वा लड़ाई खुद नैं जीवतो राखण रै वास्तै होवै। वा दिसाहीण लड़ाई है। उण मांय कोई समाजू सत्ता सूं जूझणो नी पड़ै।

मौजूदा हालाता मांय पसर्योड़ै अन्याव, अनीत अर अरुचि सूं पैदा होयेड़ो हर जिम्मेवार विद्रोह म्हारी निजरां मांय साहित है। कविता रै परिप्रेक्ष्य सारू इतो ई कैय सकूं कै कविता भी साहित री एक सशक्त विधा है जिण रै जरियै मूं मानखै नैं उणरै हुवण री बोध करवायो आवै है। दुनियां रै बदळाव अर पिछाण मांय इणरी महताऊ भूमिका है।

हर आदमी समाज मांय आपरो 'पार्ट' अदा करै। समाज नैं की देवणो चावै, क्यूं कै उणरी सार्वभौम इच्छा आपस मांय प्रेम अर सुख सूं रैवण री है। रोड़ मांय कर चालण वाळा नैं कांटा ऊपरांतर भी वैवणो पड़ै। मैं भी अेक गैला मार्थ उभो हूं, मन मांय विस्वास, हाथ मांय कलम, मूंढ़ड़ा मांय की सबद अर आंख्यां मांय एक सुपनो है कै 'काल चोखो व्हैला.....'।

अेक धीठ सोनचिड़ी

धीठ सोनचिड़ी
चिगावै मनै
पेली किरण सागे
आडा रै माथै

चहकै वा
फुदकै वा
इण आंगण सूं उण आंगण तांई
फड़-फड़ावे पांख्यां
तावड़ो व्हो कै ठंड
तोफान व्हो कै बिरखा
वा नी चूकै
सूरज रै सागै
आडा माथै पूगै

मोटी पांख्यां सूं
हरमेस वंच आई है
नीं जाणै, इती हिम्मत
कठा सूं पाई है
मै घणीज वार
उजाड़यो है उणरो धुरसालो
चूंच में दाब्यां घोचो
पाछी आडै माथै, आय विराजै वा

म्हारै इण कुटैव सूं
नी थाकी नीं ऊथपी वा
उणी चाव सू
घर बणावा लागी

उणरै धुरसाळां मे
विचिया री चैचाट सुणीजै

इण चेंचाट रै समयै
अवै वेटैम आ धमकै वा
कोड़ो चूंच मांय नै चहकै वा
वधावै हिम्मत बिचियां री
पग उठावण री
पाख्या फड़फड़ावण री
केंवती रै वै
बिचिया नै वा
वेटा ! कदेई मत हारज्यो
अंतहीण आकाश नै नापज्यो ।

जागता सुर

थे म्हा सूं
हरमेस वात करणी चाई
मोसम माथै
आ जाणता थकां थै
मनै मोसम पसंद नी
जूण म्हारै वास्तै

फगत सुरगो सुपनो नीं
थे हरमेस
आख्यां मांय उतारणी चाई
तितलियां अर सुगंध
का पछै
मकराणी छूवण

थे हरमेस टाळता रैया
जमीन सूं उठयोड़ा सुवाल
थे कंवलै मोसम नै
पसरयोड़ै तावड़ै हेटै दावणो चायो

उधार लियोड़ी पाख्यां माथै
अकास मापणो चायो

करी कुबद जबर पाणी रोकण री
पण बाद पड़ियोड़ो पाणी
उकलियां उफण पड़ैला

आ मत सोच कै
म्है गूंगा हां होठ नी खोलाला
थूं नीं देख्यो
उण दिन एक टावर
पूरी तागत सूं
आडो भचेड़ रैयो हो
ताजी हवा खातर
घ्‌जा दिन्ही ही खिड़कियां थारै घर री
वा अवाज ही जागते सुर री
पण थूं अणदेख्यो करै
जद जद भूखा मिनख हाको करै

थूं सबद उछाळै
आ जाणतां थकां थै
आखर मलम नीं होवै
जकी जुगां जूना घाव भरदै

आखर ?
आखर तो है धार
अर कविता एक हथियार
मैं कर रैयो हूं तीखो अर तेज
इण हथियार नै उण टीगर सारू
जको ताजी हवा खातर आडो बजाय रैयो है
थारै घर री खिड़कियां धूजाय रैयो है